मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

टिकटें बंटते ही खुली पोल 'अनुशासित' पार्टी की सोनिया और नटवर 2

कर्ण दलाल के इशारों पर नाचने वाली पुलिस ऐसे ही पिटेगी 3

सौ दिन मोदी सरकार के, जनता के, लिए 'बाबाजी का ठुल्लू' तुर्की-ब-तुर्की 5

राणा प्रताप आहुजा की हत्या पुलिस के बिकाऊ होने का नतीजा फ़रीदाबाद की चुनाव लीला 8

वर्ष 27 अंक 21 फरीदाबाद, मंगलवार, 16-30 सितम्बर 2014 फोन : - 9999595632 2 ₹

'आज़ादी' का दावेदार तोता छोटे से बड़े पिंजरे की ओर

करप्शन ब्यूरो ऑफ़ इंडिया का बिकाऊ रणजीत!

सी बी आई के निर्देशक रणजीत सिन्हा ने 'चोरी और सीनाजोरी' वाली कहावत भी कोसों पीछे छोड़ दी है। वे सरेआम, डंके की चोट पर सी बी आई को बेच रहे हैं और इसे अपने डायरेक्टर होने का जन्मसिद्ध अधिकार भी बता रहे हैं। यहां तक कि सिन्हा को इस पद पर बैठाने वालों में प्रमुख लालू यादव तक ने अब यह बयान दे दिया है कि सिन्हा से भ्रष्ट डायरेक्टर सी बी आई के इतिहास में नहीं हुआ। दिलचस्प पहलू यह भी है कि रणजीत सिन्हा को डायरेक्टर बनाने की सिफ़ारिश उनके पूर्ववर्ती ए पी सिंह ने भी की थी जो स्वयं भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे हुए थे।

मज़दूर मोर्चा, दिल्ली ब्यूरो

यूं तो ए पी सिंह के जमाने से ही लोगों ने सी बी आई को बजाय सेंट्रल ब्यूरो ऑफ़ इन्वेस्टीगेशन कहने के करप्शन ब्यूरो ऑफ़ इंडिया कहना शुरू कर दिया था, पर उसको पूरी तरह साबित करने का श्रेय रणजीत सिन्हा को ही जाता है। इसमें एक बहुत बड़ी भूमिका इन दोनों पुलिस अफ़सरों के सांझे दलाल मोईन कुरैशी की रही है। रामपुर, यू पी के इस गोश्त निर्यातक ने ए पी सिंह के 300 करोड़ विदेशों में हवाला के जरिये भिजवाये थे। सिन्हा की कमाई का अनुमान लगाते हुए तो बड़े-बड़ों के पसीने छूट रहे हैं। पर सिन्हा के निवास स्थान पर रखा आगन्तुक रजिस्टर यह बताता है कि कुरैशी पचासों बार उनका और उनकी पत्नी का आतिथ्य स्वीकार कर चुका है।

कहते हैं कि छीका बिल्ली के भाग्य से ही टूटता है। रणजीत सिन्हा को भी सी बी आई की सूबेदारी ऐसे समय में मिली जब 2 जी और कोयला घोटालों जैसे महास्कैम के अलावा भाजपा अध्यक्ष अमितशाह जैसे नेताओं और तरह-तरह के अन्य पूंजीशाहों के तमाम मामले सी बी आई के जांच दायरे में थे। ए पी सिंह ने जितनी मलाई निकालनी थी वह निकाल चुका था। अब उसे ऐसे उत्तराधिकारी की तलाश थी जो उसकी लीक पर चलकर इन तमाम मामलों का निपटान कराये। रणजीत सिन्हा उसका अपना बैचमेट था। और पैसे खाने में घाघ भी। मोईन कुरैशी ने भी सिन्हा से अपने हिसाब से बात पक्की कर ली।

कहीं ऐसा न हो कल को मुकद्दर दिन ये दिखलाये
नशा ताक़त था कुर्सी का, हवा के साथ बह जाये
अभी छोटे से पिंजरे में घुटन महसूस थी तोते
कहीं ऐसा न हो कल को बड़े पिंजरे में आ जाये

- दिनेश रघुवंशी

ध्यान रहे कि रणजीत सिन्हा वही शख्स हैं जो बतौर एस पी, सी बी आई बिहार के चारा घोटाला मामलों में राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू यादव को फ़ायदा पहुंचा रहा था। तब उसकी इतनी बदनामी हुई थी कि न केवल सी बी आई ने उसे वापस उसके राज्य (बिहार) में भेज दिया बल्कि बाद में लाख जतन करने पर भी सी बी आई में उसका पुनर्प्रवेश संभव नहीं हो पाया था। जब उसे डायरेक्टर बनाया जाना था तो लालू यादव से पुरानी मित्रता काम आई। यादव ने स्वयं सोनिया गांधी से रणजीत सिन्हा के नाम की सिफ़ारिश की।

मोइन कुरैशी के पास इस खेल में और भी पत्ते थे। तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के प्रधान सचिव कुटी नायर, जिसका लेन-देन भी कुरैशी की ही मार्फ़त था, को भी साथ लिया गया। ये कुट्टी नायर वहीं टीकेए नायर हैं जो पंजाब कैडर के 1963 बैच के आईएएस होते हुये भी पिछले 16 साल से केरल इन्डिस्ट्रयल डेवलपमैंट कार्पोरेशन के चेयरपर्सन भी हैं। यानि सरकार सीपीएम को ही चाहे कांग्रेस या भाजपा की कुट्टी नायरों की सभी को जरूरत हैं। जैसा कि अब स्पष्ट हो चला है उस जमाने के तमाम बड़े घोटालों में मनमोहन सिंह का कार्यालय स्वयं संलिप्त था। मनमोहन सिंह तो स्वयं 2 वर्ष तक सीधे कोयला मंत्री भी रहे।

शेष पेज दो पर

ख़बर दार

'लव-जिहाद' का बहता मवाद

कहते हैं कि जब असाध्य फोड़ा पक जाता है तो उससे मवाद बहना शुरू हो जाता है। भाजपा, विहिप और संघ के शरीर में पहले वाला साम्प्रदायिकता का फोड़ा भी आजकल चुनावी मौसम में 'लव-जिहाद' की सूरत में मवाद बन कर बह रहा है। जैसे असाध्य फ़ोड़े से बहते मवाद का एक ही इलाज है कि उसका ऑप्रेशन कर जड़ से निकाल दिया जाय। उसी तरह का ऑपरेशन साम्प्रदायिक फ़ोड़े पर भी किया जाना जरूरी है। तभी मवाद बन कर बहता 'लव-जिहाद' बन्द होगा।

लगता है भाजपाइयों ने स्वीकार कर लिया है कि यूपी में 11 विधानसभा व एक लोकसभा सीट के लिये होने वाले उनचुनावों में उनकी बड़ी हार होने जा रही है। लिहाजा अब वे 'सबका विकास' के नारे की बजाय 'सबका विनाश' पर उतारू हो गये हैं। इसके लिये उन्होंने मुसलमानों और हिन्दुओं को एक ही नारे से डराने का काम शुरू किया हुआ है। यह अभियान विशेषकर यूपी में जोरों-शोरों से चलाया जा रहा है। इसकी बाग़डोर गोरखपुर से भाजपा सांसद आदित्यनाथ के हाथ में है, जिसे साम्प्रदायिक दंगे भड़काने का विशेषज्ञ माना जाता है।

हिन्दुओं में यह कहकर डर पैदा किया जा रहा है कि उनकी लड़कियों को मुसलमान फंसा कर ले जायेंगेऔर उनका धर्मांतरण कर देंगे। मुसलमानों को यह कह कर डराया जा रहा है कि यदि उनके एक लड़के का सम्बंध किसी हिन्दू लड़की से हो गया तो मुसलमानों की 100 लड़कियां उठा ली जायेगी। ऐसा कोई भूला-भटका मामला प्रकाश में आते ही आदित्यनाथ जैसों की भाड़े की फ़ौज कमज़ोर व ग़रीब मुसलमानों की दुकानों व बस्तियों पर टूट पड़ती है।

कानून-कायदे से आदित्यनाथ और उस जैसे तमाम अन्य साम्प्रदायिकता भड़काने वालों को कब का जेल के सींखचों के पीछे होना चाहिये था। यदि ऐसे 100-200 गुंडों को 10-20 साल के लिये जेलों में डाला जा सके तो साम्प्रदायिकता का फ़ोड़ा दुखना तो तुरंत बंद हो जायेगा। फ़िर समय आने पर पर्दे के पीछे काम कर रहे गिरोह के असली सरदारों पर हाथ डालने की शल्य-क्रिया भी की जा सकती है। पर यह करे कौन? यूपी की मुलायम सिंह-अखिलेश यादव सरकार भी तो इसी तरह मुसलमानों के बीच असुरक्षा का डर फ़ैला कर उनके वोटों की फसल काटती आई है।दरअसल, 'लव-जिहाद' उस व्यापक मुहिम का हिस्सा है जिसमें देश को दो टुकड़ों में बांटने की एक और साजिश चल रही है। इन्दौर की भाजपा विधायक ने बयान जारी किया कि गर्बा जैसे हिन्दू त्योहारों में मुसलमानों का प्रवेश वर्जित कर दिया जाये। इसी तरह मुजफ्फरनगर जहां पिछले वर्ष भयानक साम्प्रदायिक दंगे कराये गये थे, में विहिप को आगे रख कर प्रचार चल रहा है कि मुस्लिम स्वामित्व वाले स्कूलों से हिन्दू बच्चे हटा लिये जायें। इसलिये हिन्दुओं को बाकायदा धमकाया भी जा रहा है। सवाल है कि अगर हिन्दुओं और मुसलमानों की तमाम सामाजिक गतिविधियां एक दूसरे से अलग-थलग कर दी जायें तो धर्म के आधार पर दो समाज तो बन ही गये। फ़िर उन्हें दो राष्ट्र बनने में क्या देर लगेगी?

स्वयं भाजपा के दोनों प्रमुख मुस्लिम चेहरों, मुख्तार अब्बास नकवी तथा शाहनवाज हुसैन की बीवियां हिन्दू हैं। यह भी विडम्बना है कि नकवी की हिन्दू बीवी विहिप के अध्यक्ष अशोक सिंघल की बेटी है। यानी अपने दामादों पर भाजपाई मेहरबान हैं और ग़रीब मुसलमानों को पीट कर वोटों के ध्रुवीकरण में लगे हैं।

'लव-जिहाद' का सच क्या है? एक बहुलतावादी समाज में विभिन्न धर्मों, जातियों, क्षेत्रों, भाषाइयों इत्यादि में परस्पर दोस्ती, के सम्बन्ध एवं शादी आम बातें हैं। ऐसे हज़ारों मामले हैं जहां हिन्दू पुरुषों ने मुस्लिम स्त्रियों से शादी की है। इसी तरह के अन्य धर्मावलम्बियों के मामले भी हैं। इनमें अनोखा कुछ भी नहीं। स्वयं भाजपा के दोनों प्रमुख मुस्लिम चेहरों, मुख्तार अब्बास नकवी तथा शाहनवाज हुसैन की बीवियां हिन्दू हैं। यह भी विडम्बना है कि नकवी की हिन्दू बीवी विहिप के अध्यक्ष अशोक सिंघल की बेटी है। यानी अपने दामादों पर भाजपाई मेहरबान हैं और ग़रीब मुसलमानों को पीट कर वोटों के ध्रुवीकरण में लगे हैं।

सारे देश में वर्ष भर में करीब एक लाख बलात्कार के केस दर्ज होते है। इनमें से अधिकांश में पीड़ित और दोषी दोनों ही हिन्दू होते है। इसी तरह तकरीबन दस हज़ार केस दहेज उत्पीड़न हत्याओं के प्रतिवर्ष दर्ज होते हैं। इनमें तो सारे ही पीड़ित और दोषी हिन्दू ही हैं। भाजपा, विहिप और संघ इन मामलों में खामोश रहते हैं जैसे कि इन हिन्दू स्त्रियों की दुर्दशा से उन्हें कुछ लेना-देना ही नहीं। **यानी समीकरण यह बनता है कि हिन्दू स्त्रियों पर अत्याचार का एकाधिकार हिन्दू मर्दों का ही होना चाहिये। हिन्दुओं की कन्या-भ्रूण हत्या करने क्या मुसलमान आते हैं?**

वैसे आदित्यनाथ जैसे मुखौटे के पीछे छिपे असली चेहरों को भी इस देश की जनता नंगा करेगी ही पर अभी तो यह काम भारतीय समाज के विद्रोही युवा लड़के-लड़कियां बखूबी कर रहे हैं।

भाजपाई धनपशु विपुल ने 'मज़दूर मोर्चा' रोकने का प्रयास किया

फ़रीदाबाद (म.मो.) 'मज़दूर मोर्चा' का गतांक (1-15 सितम्बर) 2 तारीख को प्रात: 4 बजे वितरण हेतु जब सेक्टर 19 स्थित मुख्य वितरक महेन्द्र कुमार दीक्षित के पास पहुंचा तो करीब 10-12 लोग वहां पहुंच गये। उन्होंने अखबार की कुल प्रतियां पूछने के बाद 2 रुपये प्रति के हिसाब से कुल 8000/-रुपये दीक्षित को देकर सारी प्रतियां उठा कर ले जानी चाही। दीक्षित के इन्कार करने पर कुछ हल्की-फ़ुल्की नौंक-झौंक हुई। खरीददारों का तर्क था कि उसे (दीक्षित) तो अखबार बेचना ही है, बजाये एक-एक प्रति परचून में बेचने के वह सारी प्रतियां थोक में बेचेगा तो उसे अधिक लाभ होगा। दीक्षित ने कहा कि वह केवल लाभ कमाने के लिये यहां नहीं बैठा है, उसका अपने पाठकों के प्रति भी कुछ कर्त्तव्य है, जिसे निभाना उसका धर्म है, पैसा ही सब कुछ नहीं होता।

दीक्षित के मना करने पर उन लोगों ने कुछ दूरी पर अपनी नाकेबंदी लगा दी। जो भी हॉकर, 'मज़दूर मोर्चा' लेकर निकल रहा था, उन्हें लालच देकह मुंह मांगे दामों पर उनसे सारी प्रतियां खरीद ली। जो प्रतियां पहले ही एन आई टी, बाटा व बल्लबगढ के सेंटरों पर पहुंच चुकी थी, और हॉकर लेकर निकल चुके थे, वे तो पाठकों तक पहुंच गयी, शेष प्रतियां उन्होंने इन सेंटरों से भी थोक में उठा लीं। असल में सेंटरों पर बैठे वितरक समझ ही नहीं पाये थे कि मामला क्या है और जब तक उन्हें सूचित किया गया सारी प्रतियां उठ चुकी थी।

मोटे तौर पर करीब 2500 प्रतियां इस तरह से पाठकों तक जाने से रोक दी गयीं। खोजबीन करने पर पता लगा कि यह सारी कार्यवाही भाजपा के होनेवाले एक उम्मीदवार विपुल गोयल की थी। उस अंक को पढ कर, पाठकों ने भाजपा के शीर्ष नेतृत्व से लेकर, नेतामंडली में शामिल होने जा रहे विपुल गोयल तक की हकीकत को बखूबी जान लिया होगा। एक सच्चे पत्रकार का यह दायित्व है कि वह अपने पाठकों को इस तरह की सच्चाइयों से अवगत कराता रहे। इसी बात को ध्यान में रखते हुए 'मज़दूर मोर्चा' की 3500 प्रतियां अतिरिक्त तुरन्त छपवा कर अगले ही दिन तमाम सेंटरों पर फ़िर से लगवा दी। इसके साथ-साथ तमाम वितरकों एवं हॉकरों को भी उनके कर्त्तव्य के बारे में अच्छे से समझा दिया गया। इसके चलते विपुल गोयल कोई बड़ी कार्यवाही तो नहीं कर पाया, हां कोई छोटी-मोटी घुस पैंठ के बारे में कहा नहीं जा सकता। फ़िर भी किसी पाठक को 'मोर्चा' न मिला हो और हॉकर सहयोग न कर रहा हो तो 'मोर्चा' सम्पादक तथा वितरकों को, दिये हुए नम्बरों पर फ़ोन अवश्य करें।

उक्त घटना विपुल गोयल के चरित्र को और अधिक अच्छे से समझने वाली साबित हुई है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि सत्ता की दलाली करने वाला, जजों, अफ़सरों व नेताओं को खरीदने वाला यह चोर बाजारिया सब कुछ बिकाऊ समझता है। यह ठीक है कि उसने अब तक बहुत लोगों को खरीदा होगा, परन्तु अभी इस दुनियां में वे लोग भी बचे हैं जो बिकाऊ नहीं हैं।

जनता के लिये सोचने व समझने वाली बात अब यह है कि इस विपुल गोयल जैसे लोग यदि विधायक मन्त्री आदि बनेंगे तो वे किस-किस को नहीं खरीदें व बेचेंगे। बहरहाल भाजपा हाई कमांड ने इसकी टिकट को रोक लिया है। जानकार बताते हैं कि 'मोर्चा' प्रतियां भाजपा के राष्ट्रीय मुख्यालय तक पहुंचा दी गयी हैं जहां सारे मामले पर गंभीरता से विचार-विमर्श हो रहा है।